में व्यस्त थे। धूरखेली के बाद कोई ग्यारह बारह बजे गाँव के लोग नहाने धोने में व्यस्त थे। बच्चे रंग खेलने में लगे थे.. तभी गाँव के दो गुंडे सतीश और दिनेश रमेशर वाली के घर में घुस आये। दोनों आवारा एवं एक नंबर के शराबी थे। दोनों की उम्र करीब अट्ठाईस-तीस बरस के आसपास की थी एवं वे मजबूत कद काठी के थे। जब तक इनके बाप जीवित थे, बाप की कमाई पर आवारागर्दी करते रहे और अब पुरखों की संपत्ति बेच रहे थे।

समाज में कुछ पुरुष अभी भी ऐसे हैं, खासकर गांवों में जिनके लिए घर से बाहर निकलने वाली स्त्रियां, सबसे हँसने बोलने वाली स्त्रियाँ कुलटा एवं चरित्रहीन होती हैं। सतीश एवं दिनेश भी ऐसी ही मानसिक विकृति से पीड़ित थे।

रमेशर वाली घर में अकेली थी। उसका पति कलकत्ता में था एवं बेटा सुरेन्द्र कहीं खेलने में व्यस्त था। वह अपने बेटे के लिए होली के अवसर पर कुछ विशेष खाना बना रही थी। ऐसा अवसर बहुत कम होता था जब उसे अपने बेटे के लिए कुछ बनाने का अवसर मिलता था। ज्यादातर तो वह सुबह सात बजे ही अपने फेरी के काम से निकल जाता था। अचानक से सतीश ने उसको पीछे से पकड़ लिया। यह तो साफ ही था कि दोनों के इरादे नेक नहीं थे। दोनों उसके साथ जबरदस्ती करने का प्रयत्न करने लगे।

थोड़ी देर के बाद अचानक से हुए शोर गुल ने सबका ध्यान खींचा। चूल्हे पर पकवान तल रही स्त्रियाँ चूल्हा छोड़कर बाहर आ गयी, आराम फरमाते या नहाते पुरुष भी दौड़े आये। लोगों ने देखा कि दोनों बदमाश युवक बदहवास भागते चले आ रहे हैं और उनके पीछे रमेशर वाली हाथ में कुल्हाड़ी लिए दौड़ी आ रही है। उसके कपड़े फटे थे एवं साड़ी खुल चुकी थी। वह पेटीकोट और ब्लाउज पहने थी। चोट लगने के कारण उसकी जीभ कट गयी थी एवं जीभ से खून रिस रहा था। वह साक्षात् चंडी प्रतीत हो रही थी। उसके आँखों से खून टपक रहा था। वह क्रोध की अग्नि में धधक रही थी। साफ-साफ लग रहा था कि इन गुंडों ने उसके साथ गलत करने की कोशिश की थी जिसका उसने विरोध किया था एवं टांगी लेकर उनको मारने के लिए उतारू हो गयी थी। स्त्रियाँ ऐसे तो निर्बल एवं ममतामयी प्रतीत होती हैं लेकिन अगर वे बदला लेने के लिए उद्धत एवं हिंसक हो जाए तो वे पुरुषों से अधिक सबल हो जाती हैं।

उस खुले सी जगह में स्त्री पुरुषों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। बच्चे भी खेल छोड़ कर वहां जमा हो गए। उस जगह के चारों ओर घर थे एवं बीच में एक खुली जगह थी। जो नववधुएँ घर से बाहर नहीं आ सकती थीं वे खिड़कियों पर आ गयीं।

स्त्री पुरुषों की भीड़ देख कर दोनों गुंडों को हौसला हुआ, उन्होंने सोचा कि वे लोग उनकी तरफ होंगे एवं उनकी मदद करेंगे। आखिर वे उनकी जाति वाले थे। वे रुक गए एवं रमेशर वाली के चरित्र पर लांछन लगाते हुए एवं भद्दी गालियां देते हुए उससे टांगी छीनने का प्रयत्न करने लगे। लेकिन रमेशर वाली तो चंडी बन चुकी थी। वह कहाँ उनके वश में आने वाली थी। लेकिन इसी बीच जो हुआ उसकी कल्पना उन गुंडों ने नहीं की थी। गाँव की औरतें रमेशर वाली का पक्ष लेते हुए उन गुंडों पर टूट पड़ीं। जिसके हाथ में जो लगा उसी से उनकी पिटाई करने लगीं। कोई लकड़ी से, कोई चप्पल से तो कोई खाली हाथ से भी उन गुंडों पर पिल पड़ीं। जब घर की औरतें किसी की ठुकाई पिटाई कर रही हों तो पुरुष चुप कैसे रहते। वे भी उन गुंडों की पिटाई करने लगे। पांच मिनट की पिटाई के बाद ही उन गुंडों की हालत सड़क पर दुर्घटना में घायल कुत्ते जैसी हो गयी। वे हाथ जोड़ कर माफी मांगने लगे, रमेशर वाली के पैर पकड़ लिए। लोगों ने समझा बुझा कर रमेशर वाली के हाथ से कुल्हाड़ी ली और उसे उसके घर तक पहुंचाया। थाने में केस हुआ और दोनों गुंडे जेल भेज दिए गए। जेल से जमानत पर रिहा होने के बाद दोनों गुंडे सतीश एवं दिनेश गाँव से बाहर कहीं कमाने चले गए। उस दिन की पिटाई और जेल जाने के बाद गाँव में रहने की उनकी हिम्मत नहीं रह गयी थी। यह नारी शक्ति की जीत थी। यह गाँव की महिलाओं की जीत थी कि उनकी सामूहिक शक्ति ने बलात्कार का प्रयास करने वाले गुंडों की न केवल पिटाई की बल्कि उन्हें जेल भी भिजवा दिया।

लेकिन इस घटना के बाद रमेशर वाली बुझी बुझी सी रहने लगी। शादी, ब्याह, मुंडन आदि में गला फाड़ कर माइक पर गीत गाने वाली, नेग के लिए सौ सौ हुज्जतें करने वाली आवाज़ ने खामोशी अख्तियार कर ली थी। वह अब किसी के यहाँ नहीं आती जाती थी। चुपचाप अपने घर में पड़ी रहती थी। गांव की शादियाँ सूनी होने लगीं। सब उससे मिन्नतें करते पर वह तो मानो बर्फ की सिल्ली बन गयी थी। उसके घर के ओसारे में कूड़ा पड़ा रहता, मानो वहां कोई रहता नहीं हो। कई कई दिनों तक वह घर में झाड़ू नहीं लगाती। उसके जीवन से आनंद कहीं खो गया था।

उसके पति ने, जिसे अपनी बहादुर पत्नी की उसके हिम्मत और संघर्ष के लिए सराहना करनी चाहिए थी, उस पर नाज होना चाहिए था, उसका साथ छोड़ दिया। इस बार जब वह कलकत्ता गया तो वापस नहीं लौटा। कई लोगों से सुना गया कि उसने वहीं किसी दूसरी औरत से शादी कर ली थी।

इसी दौरान उसका बेटा सुरेन्द्र भी गाँव छोड़ कर कहीं चला गया। उसे शायद यह लगता था कि जो कुछ हुआ उसमे उसकी माँ की ही गलती है। अब वह बाहर कहीं कोई व्यवसाय करने लगा था।

उसे लगता था कि अपने पति और बेटे के लिए वह एक ऐसे दोष की दोषी थी, जिसे उसने किया ही नहीं था। जिसका उसने बहादुरी से प्रतिवाद किया था और जिसके लिए वह प्रशंसा की हकदार थी। उसका दोष शायद सिर्फ यही था कि वह एक औरत थी।

रमेशर वाली एक बहादुर औरत थी। वह सारी दुनिया से लड़ लेती। बड़े से बड़े तूफानों के आगे पर्वत की तरह अविचल खड़ी रह सकती थी। लेकिन अपने पति और बच्चे का वह क्या करती। उन्हें कैसे समझाती। पूर्वाग्रही एवं दुराग्रही मानसिकता से ग्रसित अपने पति और बेटे के सामने वह लाचार हो गयी। वह एक ममतामयी माँ थी। उन दो गुंडों सतीश और दिनेश से वह अकेले निबट सकती थी लेकिन अपने कलेजे से कोई भला कैसे निबटे। वह टूटती चली गयी।

रमेशर वाली को जो देखता उसका कलेजा धक से बैठ जाता। जीवन से भरी हुई, सदा हँसती, गाती, मुस्कुराती रमेशर वाली अचानक से बूढ़ी लग रही थी। मानो किसी ने चंचला नदी के प्रवाह को रोक दिया हो और उसके पानी में काई पड़ गयी हो। वह विधवा की तरह सफेद धोती को साड़ी की तरह शरीर पर लपेट कर पहनती। कुछ महीनों में लगता था उसने कई वर्षों की यात्रा कर ली हो। मानो किसी खिले हुए फूल के बाग को पागल हाथियों ने रौंद दिया हो। उस घटना के बाद रमेशर वाली ने कभी ब्लाउज नहीं पहना और एक विधवा की तरह ही जीवन जीती रही।

रात में कभी कभी जोर से उसके रोने की आवाज आती और उसके बाद वह सिसकते हुए गाती कौने चोरवा नगरिया लूटले हो रामा। गाँव की स्त्रियाँ उसके बाद बेचैन होकर उठ बैठतीं। ■